International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.340, Volume 04, No. 01(II), January - March, 2022, pp.42-44

मेव जाति के शिक्षित एवं अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन एवं अध्ययन आदतों का अध्ययन

सतीश कुमार मीणा*
डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा**

i:Lrkouk

शिक्षा ही वह ज्योति पुंज है जो मानव मस्तिष्क के अंधकार को दूर कर के ज्ञान रूपी प्रकाश को आलोकित करती है। शिक्षा मानव को मुक्ति का मार्ग दिखलाती है, शिक्षा समाज का आधार मानी जाती है। शिक्षा के द्वारा हमारी कीर्ति का प्रकाश चारों ओर फैलता है तथा शिक्षा ही हमारी समस्याओं को सुलझाती है।

प्रत्येक विद्यार्थी के जीवन में पारिवारिक वातावरण और क्रिया कलापों का प्रभाव अवश्य पड़ता है। अच्छे परिवार के विद्यार्थी में अच्छी आदतें और परम्परायें देखी जाती है। वे व्यवहार कुशल सद्भावनापूर्ण उच्च शैक्षिक उपलब्धि, सुसमायोजन की भावना से परिपमर्ण होते हैं। परन्तु यदि परिवार में विपरीत वातावरण विद्यामान है तो विद्यार्थी में अनेक दोष और बुराइयाँ उत्पन्न हो जाती है। पारिवारिक वातावरण और बाहरी क्रिया कलापों का प्रभाव बालक के सामाजिक, संवेगात्मक और शैक्षिक व्यवस्थापन पर पड़ता है।

बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन क्षमता एवं अध्ययन आदतों के विकास में परिवार की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है, क्योंकि बालक गर्भावस्था से ही अपने घर–परिवार के संपर्क में रहता है। यदि घर परिवार का वातावरण दूषित है तो बालक पर इसका मानसिक व शारीरिक रूप से प्रभाव पड़ता है। वह अनेक समस्याओं से ग्रस्त हो जाता है। उसमें अनेक विकृतियाँ आने लगती हैं और वह अपराध की ओर उन्मुख हो जाता है। इसलिए बालक के उत्तम शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन क्षमता एवं अध्ययन आदतों के विकास पर परिवार का महत्वपूर्ण हाथ होता है। परिवार एक सामाजिक इकाई है। बालक घर से ही विभिन्न प्रकार के रीति–रिवाज, परम्पराओं व समर्पण की भावना को सीखता है। परिवार के सदस्य जैसा व्यवहार करते हैं बालक भी धीरे–धीरे उसी प्रकार का व्यवहार करता है। वह परिवार के अन्य सदस्यों का अनुकरण करता है फिर उसी व्यवहार को अपने जीवन में ढालने लगता है। इसलिए कहा जाता है कि बालक पर अभिभवकों के शैक्षिक स्थिति का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जाता है।

बाल्यकाल की शिक्षा व्यक्ति के जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। बाल्यकाल की शिक्षा घर में ही प्राप्त होती है। एक शिक्षित अभिभावक अपने बच्चों में जो शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन क्षमता एवं अध्ययन आदतों को विकसित कर सकता है वह एक अशिक्षित अभिभावक नहीं।

समस्या का औचित्य

बलकों का सर्वांगीण विकास करना प्रत्येक अभिभावक, परिवार, समाज व राष्ट्र का प्रमुख कर्तव्य है। यदि माता–पिता बालकों को रूचियों, क्षमताओं एवं योग्यताओं को ध्यान में रखते हुए उसे अध्ययन के लिए

* शोधछात्र, राजऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान।
** शोध निर्देशक, राजऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर एवं असिसटेन्ट प्रोफेसर, आर्य महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, अलवर, राजस्थान।

प्रोत्साहित करं एवं उसकी शिक्षा में यथा सम्भव स्वयं सहयोगी बने तो निश्चय ही बालक अपनी शिक्षा के सन्दर्भ में सार्थक विचारधारा बनायेंगे। माता–पिता का स्नेह एवं सहयोग प्राप्त कर दृढ़ शैक्षिक आधार स्थापित कर स्वयं अध्ययन के प्रति उन्मुख होंगे।

परिवार समाज रूपी भवन की नींव का पत्थर है, जिसकी उपस्थिति सार्वभौमिक है चाहे वह प्राचीन हो या आधुनिक, ग्रामीण हो या शहरी। बालक के विचार–व्यवहार एवं गुण उसके परिवार के अनुसार ही प्रतिबिम्बित होते हैं। पूर्व में हुए शोधकार्यों के निष्कर्षों के आधार पर हम कह सकते हैं कि बालक–अभिभावक सम्बन्ध एक सुसभ्य पारिवारिक व सामाजिक वातावरण के लिये अत्यन्त उपयोगी है। यदि पारिवारिक सम्बन्ध विद्यार्थियों के साथ मधुर उत्तम होगे तो बालक का शैक्षिक उपलब्धि स्तर व समायोजन व अध्ययन आदतों भी श्रेष्ठ होगी। बालक में गुणों की नींव बाल्यकाल से ही पड़ जाती है। माता पिता के शिक्षित होने से बालक के अच्छे गुणों का समावेश प्रारम्भ होता है। शिक्षित माता पिता के बालकों में अच्छी अदतों का परम्पराओं का समावेश होता है। यदि बालक के माता पिता अशिक्षित है तो बालक में अनेक दोष व बुराइयां उत्पन्न हो जाती है। शिक्षित माता पिता के क्रिया कलापों का प्रभाव बालक के समायोजन स्तर, अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। पूर्व अध्ययनो के निष्कर्षों के आधार पर जिन बालकों के माता पिता शिक्षित होते हैं उनके बच्चे सुसमायोजित होते हैं उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च होती है। यदि हम इतिहास को देखें तो प्राचीन समय में बालकों को वृद्धजनों से नैतिक मूल्य विरासत में मिलते थे। उन नैतिक व सभ्य मूल्यों के कारण ही विद्यार्थी आगे चलकर अपने जीवन को शैक्षिक उपलब्धि स्तर से सुदृढ़ बनाकर तो संवारता ही था अपितु अपने परिवार समाज व राष्ट्र को भी प्रगति के पथ पर चलाता था।

शोधकर्ता ने मेवात क्षेत्र की मेव जाति के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि व समायोजन व अध्ययन आदतों पर माता पिता की शिक्षा के प्रभाव को अपने अध्ययन का विषय बनाया। ''भारत के उत्तर पश्चिम में हरियाणा, राजस्थान व उत्तर प्रदेश में स्थित मेवात क्षेत्र एक ऐतिहासिक व पारंपरिक क्षेत्र है। मोटेतौर पर इसकी सीमा में हरियाणा का मेवात जिला, राजस्थान के अलवर, भरतपुर व धौलपुर जिले तथा साथ लगते उत्तर प्रदेश के क्षेत्र आते हैं।''[1] मेव जाति इस मेवात क्षेत्र में रहने वाली अल्पसंख्यक जाति है। मेवात क्षेत्र में मेव शताब्दियों से रहते आरहे हैं। एक सिद्वान्त के अनुसार वे हिन्दू राजपूत थे जो 12वीं और 17वीं शताब्दी के बीच इस्लाम में परिवर्तित हो गए। मेवों नें मुस्लिम आक्रमण के बाद इस्लाम कबूल कर लिया था। मेव वंश मूलतः एक संगठन है जिनमें हिन्दुओं की चार क्षत्रिय जातियाँ अहीर, जाट, गुर्जर और राजपूत पाये जाते हैं।

मेव जाति के विद्यार्थियों की स्थिति को देखते हुए मेव जाति के शिक्षित एवं अशिक्षित अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन एवं अध्ययन आदतों पर और ध्यान देने की आवश्यकता है। अशिक्षित अभिभावक अपने बालक बालिकाओं को सामान्य बालकों की तुलना में कम न आंके तथा उनकी समस्याओं को समझें एवं उन्हे दूर करने का यथासम्भव प्रयास करें। उनकी रूचियों, शैक्षिक उपलब्धि व समायोजन को विकसित करें व निम्न शैक्षिक उपलब्धि के कारणों को जानकर उन्हे दूर करने के उपाय करें। शिक्षक भी अशिक्षित अभिभावकों के बालक बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि व अध्ययन आदतों को ध्यान में रखते हुए उनकी समस्याओं को समझे तथा उन्हे दूर करने का पूरा प्रयास करें तथा उनकी समायोजन व निम्न शैक्षिक उपलब्धि के कारणों को जानकर उन्हे दूर करने के उपाय करें। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अध्ययन आदत एक अभिन्न अंग है एवं समायोजन का विशिष्ट स्थान होता है। आदतें मानव के व्यवहार को प्रभावित करती है। विद्यार्थी के व्यवहार को परिष्कृत करने में अध्ययन आदतें एवं समायोजन प्रेरणा स्त्रोत का कार्य करती हैं। अतः कहा जा सकता है कि अध्ययन आदतें एवं समयोजन एक दूसरे के पूरक होते है। श्रेष्ठ शैक्षिक उपलब्धि के लिये बेहतर अध्ययन आदतें एवं समायोजन का होना आवश्यक है। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए इनका संतुलित होना भी अत्यन्त आवश्यक है।

---

1 "Mewat" The Imperial Gazetteer of India] 1909, v.17, p.313. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/mewat

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ गया सिह(2012)अधिगम कर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, आर लाल बुक डिपो।
2. सारस्वत, डॉ. मालती (2006) शिक्षा मनोविज्ञान की रूपरेखा, आलोक प्रकाशन लखनऊ।
3. पाठक,पी.ड़ी. (2007):''शिक्षा मनोविज्ञान'' विनोद पुस्तक मुन्दिर आगरा।
4. भार्गव, महेश (2007) आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण व मापन' एच.पी. भार्गव बुक हाउस आगरा।
5. जायसवाल, सीताराम (1994) 'शिक्षा मनोविज्ञान' आर्य बुक डिपो मंदिर करोल बाग नई दिल्ली।
6. भारद्वाज, दीप्ति (2007) एम.फिल. शोध प्रयोजना, चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय सिरसा हरियाणा।

❖◆❖